PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 4, ISSUE 3

कुमाऊँ में थारू जनजाति की आय व रोजगार का अध्ययन
(तहसील खटीमा के विशेष सन्दर्भ में)

गणेश चंद
शोधार्थी
अर्थशास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय अमोडी
चम्पावत. उत्तराखंड. भारत

डॉ. उषा पंत जोशी
असोसिएट प्रोफेसर एवं शोध निर्देशिका
अर्थशास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय अमोडी
चम्पावत. उत्तराखंड. भारत

प्रस्तावना-

थारू जनजाति के उद्गम के सम्बन्ध में विद्वानों एवं लेखकों ने भिन्न भिन्न मत प्रदान किये हैं.

मनावशास्त्रीय आधार पर थारू जनजाति मिश्रित प्रजाति की जनजाति है,और यह अपने शारीरिक बनावट एवं विशेषताओं में मंगोलियन प्रजाति के सबसे अधिक निकट हैं[1].थारू जनजाति में मंगोलियन प्रजाति से सम्बंधित विशेषताएँ नेपाली तथा अन्य पर्वतीय जातियों से विवाह करने के कारण आई है.इस जनजाति के व्यक्ति की झुकी हुई आंखें तथा गाल की हड्डी उठी हुई है.जो मंगोल प्रजाति से इनके मिश्रण का ही धोतक है.थारू जनजाति पर कुछ अन्य किये गए अध्ययन में इस जनजाति में मंगोलियन प्रजाति से सम्बंधित इन विशेषताओं को स्वीकार करते हुए भी अन्य शारीरिक विशेषताओं के लिए उन्हें द्रविड़ प्रजाति[2] तथा अन्य भारतियों से संबद्ध किया गया है[3].

वरिष्ठ पत्रकार शक्ति प्रसाद सकलानी ने थारुओं का राजपुताना सम्बन्ध नहीं माना है.अपनी पुस्तक रुद्रपुर का इतिहास और विकास नामक पुस्तक के प्रष्ठ संख्या -69 पर उन्होंने थारुओं की शारीरिक बनावट का वर्णन किया है.थारुओं के रंग ,रूप,नाक,कान,कदकाठी,आंखें और चेहरे को आधार मानकर उनका राजघराने से सम्बन्ध नहीं माना है.उनके अनुसार थारू महाभारतकालीन कबीलाई के किसी जाति से सम्बंध रखते थे या इनका सम्बन्ध मध्यपूर्वी एशिया की किसी जाति से है.

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य खटीमा तहसील में निवास करने वाली थारू जनजाति के परिवारों की आय व रोजगार पर प्रकाश डालना है.

पूर्व ज्ञान से सम्बंधित विवरण-

विद्वान लेखक डा० अजय रावत ने "तराई के वन और वनवासी" नामक अपनी पुस्तक के प्रष्ठ संख्या 144 पर इतिहासकार एच आर नेवल का हवाला देकर थारुओं को राजपूत स्त्रियों और उनके दलित सेवकों से उत्पन्न संताने बताया है. सैकड़ो सामान्य थारुओं से जब उनके पूर्वजों एवं इतिहास के बारे में पूछा गया तो अधिकांश थारुओं ने इस विषय में बोलने से इनकार कर दिया.उन्होंने बस इतना कहा की हम राना हिन्दू हैं एवं इतिहास में लिखी बातों के बारे में कुछ नहीं जानते.कुछ लोगों ने कहा की धर्म की रक्षा के लिए हमारे पूर्वजों ने तराई के जंगलों में शरण ली थी.

सेवा निवृत उप शिक्षा निदेशक श्री लक्ष्मी दत्त भट्ट ने अपने लेख "खटीमा की विकाश यात्रा की एक झलक" में थारू जनजाति का उल्लेख किया है.उनके अनुसार 20वी सदी पूर्व खटीमा में थारू जनजाति का मुख्य निवास स्थान था.लक्ष्मी दत्त भट्ट जी का भी यही विचार था की थारू स्वयं को महाराणाप्रताप सिसोदिया का वंशज अथवा उत्तराधिकारी मानते थे एवं थारुओं ने राजस्थान से पहले नेपाल फिर भारत की ओर पलायन किया.

डा० बी०एस० बिष्ट ने 'उत्तराँचल-ग्रामीण समुदाय ,पिछड़ी जाति एवं जनजाति परिदृश्य' लिखा है देखा जाय तो आर्थिक दृष्टि से थारू जनजाति एक आत्मनिर्भर जनजाति है,जो आवश्यकता से सम्बंधित लगभग सभी वस्तुओं का उत्पादन कर लेते हैं.वर्तमान में थारू जनजाति के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है.परन्तु अब रोजमर्रा के जीवन में उपयुक्त होने वाली वस्तुएँ जैसे टोकरी,चटाई,मिटटी क बर्तन ,अनाज के भण्डारण हेतु 'कुठिया' निर्मित करना कम कर दिया है.कृषि के अतिरिक्त अब यह गैर कृषि श्रमिक ,सरकारी व अर्ध सरकारी कार्यों में संलग्न हैं.कुछ एक ने अपना स्वयं का धंधा शुरु कर दिया है.इस कारण इनकी आर्थिक स्थिति में औसत सुधार हुआ है.

उद्देश्य-

1.कुमाऊँ की तहसील खटीमा में थारू जनजाति के आय का अध्ययन

2.कुमाऊँ की तहसील खटीमा में थारू जनजाति के रोजगार का अध्ययन.

परिकल्पना-

1.थारू जनजाति के लोगों की आय का स्तर औसत है.

2.थारू जनजाति के लोगों का रोजगार का स्तर निम्न है.

शोध प्राविधि-

प्रस्तुत शोध पत्र में निदर्शन विधि से प्राथमिक आंकड़ों को एकत्र किया जाएगा. आंकड़ों का संकलन प्रश्नावली के माध्यम से किया जाएगा.शोध के अंतर्गत 100 परिवारों का अध्ययन किया जाएगा तथा समानान्तर माध्य का प्रयोग कर आय व रोजगार के सम्बन्ध में निष्कर्ष ज्ञात किया जाएगा.

निम्न तालिका में 100 थारू परिवारों के रोजगार के सम्बन्ध में जानकारी दी गई है-

परिवारों की संख्या	आय का मुख्यः स्रोत कृषि जमीन		रोजगार सरकारी	रोजगार अन्य
	स्वयं	बटाई		
42 परिवार	शुन्य	औसत 1.71 बीघा	_	मजदूरी,ड्राईवर,दुकान,मिल,इत्यादि
30 परिवार	1-5 बीघा	औसत 1.16 बीघा	7 परिवार	बिजली का काम,फैक्ट्री,मजदूरी इत्यादि
12 परिवार	6-10 बीघा	औसत 2.33 बीघा	-	मजदूरी,मिल,प्राइवेट शिक्षक
11 परिवार	21-50 बीघा	औसत 1.33 बीघा	4 परिवार	-
5 परिवार	51-96 बीघा	-	-	-
कुल परिवार=100				

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है की 100 परिवारों में से लगभग 42 प्रतिशत थारू परिवार ऐसे हैं जिनके पास स्वयं की कोई जमीन नहीं है. जीविकोपार्जन के लिए इन परिवारों ने बटाई में जमीन ली है.बटाई में ली गई जमीन भी औसतन डेढ़ बीघा ही है.कृषि मौसमी रोजगार होने के कारण वर्ष के अन्य दिनों में थारू लोग मजदूरी करने निकल पड़ते हैं जैसे मनरेगा के माध्यम से काम करना,मील में मजदूरी करना,मकान बनाने में कार्य करना इत्यादि.

इसी प्रकार कुल 100 परिवारों में से केवल 11 परिवार के लोग ऐसे हैं जिनके पास सरकारी रोजगार है.वे या तो आर्मी में हैं या पुलिश में अथवा रेलवे और सरकारी शिक्षक हैं या अन्य किसी सरकारी महकमें में कार्यरत हैं.

class interval	Mid value(m)	No of families(f)	Mf
0-80000	40000	71	28,40,000
80000-160000	120000	6	7,20,000
160000-240000	200000	10	20,00,000
240000-320000	280000	7	19,60,000
320000-400000	360000	0	0
400000-480000	440000	2	8,80,000
480000-560000	520000	2	10,40,000
560000-640000	600000	0	0
640000-720000	680000	0	0
720000-800000	760000	2	15,20,000
		∑f=100	∑mf=1,09,60,000

समानान्तर माध्य $\bar{X} = \sum mf/\sum f$

=1,09,60,000/100

=1,09,600

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है की थारू परिवारों की प्रति वर्ष आय औसत रूप में 1,09,600 रुपये है,अर्थात 9133 रुपये मासिक. **औसत मासिक आय के लगभग दस हजार होने का कारण यह है की कुछ थारू परिवार के लोगों के पास कृषि जमीन का अधिक होना है** अन्यथा अधिकतर थारू परिवार गरीबी का जीवन व्यतीत कर रहे हैं.रोजगार के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है की केवल 11% थारू परिवार में कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हें सरकारी रोजगार प्राप्त है.

निष्कर्ष-

वर्तमान में भी अधिकतर थारू परिवार रोजगार के लिए कृषि पर निर्भर हैं.इसके अतिरिक्त थारू लोग कृषि मजदूरी,ड्राईवर,बिजली का काम,दुकान,मकान बनाने में मजूदरी,अस्पताल में नर्स,वार्ड बॉय इत्यादि पेशे से जुडें

हैं,सरकार द्वारा अनुसूचित जनजाति को आरक्षण देने के कारण वर्तमान में इनकी स्थिति में जरा सुधार अवश्य हुआ है परन्तु पूर्ण रूप से विकास की राह में आने में समय अवश्य लग जाएगा.

सन्दर्भ-

A. HR Risley :The Tribes & Cast Of Bengaal Volume Ii:P.313

B. S Knowles: Gospel In India : P,214

C. DR.DN Majumdar :Races & Culture Of India:P.7

J.C Nesfied; Description Of Manners Industries And Religion Of The Tharu And Buksha Tribe Of Upper India,Cacutta Review 1885, P.37

William Crook :Tribes And Castes Of North Western Provinces And Oudh:1896: Part I; Cosmo Publications New Delhi P.385